कक्षा : द्वितीय– जैनागम स्तोक वारिधि (परीक्षा 04 जनवरी, 2026)

उत्तरतालिका

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- 15x1 = (15)

(i) दर्शन मोहनीय की कितनी प्रकृतियाँ होती है-
(क) 16 (ख) 3
(ग) 4 (घ) 2 (ख)

(ii) जीव ऊँच-नीच कुलों में किस कर्म के प्रभाव से उत्पन्न होता है-
(क) गोत्र कर्म (ख) अंतराय कर्म
(ग) नाम कर्म (घ) आयु कर्म (क)

(iii) वस्तु के सामान्य धर्म का जानना कहलाता है-
(क) चारित्र (ख) ज्ञान
(ग) दर्शन (घ) तप (ग)

(iv) सूखे तालाब की दरार जैसा क्रोध है-
(क) अप्रत्याख्यानी (ख) प्रत्याख्यानावरण
(ग) संज्वलन (घ) अनन्तानुबन्धी (क)

(v) असाता वेदनीय कर्म का बन्ध कितने प्रकार से होता है-
(क) 12 (ख) 6
(ग) 8 (घ) 10 (क)

(vi) सातवीं नरक की गति हैं-
(क) 40 की (ख) 10 की
(ग) 46 की (घ) 50 की (ख)

(vii) असन्नी मनुष्य की आगति है-
(क) 179 की (ख) 267 की
(ग) 171 की (घ) 276 की (ग)

(viii) अपर्याप्त अवस्था में आयुष्य पूर्ण कर जीव किस गति में उत्पन्न नहीं होते हैं-
(क) नरक गति (ख) देव गति
(ग) युगलिक (घ) तीनों में (घ)

(ix) किसकी गति 563 नहीं होती है-
(क) गर्भज की (ख) अकर्म भूमिज सन्नी मनुष्य की
(ग) पुरुषवेद की (घ) समुच्चय जीव की (ख)

(x) पाँचवें गुणस्थान में कितने उपयोग होते हैं-
(क) 6 (ख) 7
(ग) 12 (घ) 14 (क)

(xi) छठे गुणस्थान में कौनसा योग नहीं होता है-
(क) आहारक (ख) आहारक मिश्र
(ग) कार्मण (घ) वैक्रिय (ग)

(xii) घोर अंधेरी रात्रि में रस्सी आदि का स्पर्श होना कहलाता है-
(क) ईहा (ख) अवग्रह
(ग) अवाय (घ) अनुवाय (ख)

(xiii) चौस्पर्शी रूपी में कितने स्पर्श पाये जाते हैं-
(क) 4 (ख) 8
(ग) 6 (घ) 2 (क)

(xiv) सातवीं नरक में जीव कितने उपयोग लेकर जाते हैं-

(क) 2 (ख) 7

(ग) 3 (घ) 5 (घ)

(xv) उपयोग का पाँचवाँ भेद है-

(क) मतिज्ञानोपयोग (ख) मतिअज्ञानोपयोग

(ग) केवल ज्ञानोपयोग (घ) श्रुत अज्ञानोपयोग (ग)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- 15x1 = (15)

(i) प्रत्याख्यानावरण कषाय की स्थिति चार माह की है। (हाँ)

(ii) मोहनीय कर्म आत्मा के अमरत्व गुण को प्रकट नहीं होने देता है। (नही)

(iii) दर्शनावरणीय कर्म का उदय जीव नौ प्रकार से प्राप्त करता है। (हाँ)

(iv) नाम कर्म का अबाधाकाल सात हजार वर्ष है। (नही)

(v) 'सराग संयम' साधु धर्म को कहते हैं। (हाँ)

(vi) पहली से चौथी नरक तक के जीव आयुष्य पूर्ण कर केवली बन सकते हैं। (हाँ)

(vii) पाँचवीं नरक की आगति 16 की है। (नही)

(viii) वासुदेव की आगति 83 की नहीं है। (हाँ)

(ix) बलदेव की गति अमर है। (हाँ)

(x) देवगति के 298 भेद होते हैं। (नही)

(xi) चौदहवाँ गुणस्थान योग रहित होता है। (हाँ)

(xii) रूपी अरूपी का थोकड़ा श्री भगवती सूत्र शतक 5 उद्देशक 12 में है। (नही)

(xiii) परमाणु से लेकर संख्यात-असंख्यात प्रदेशी स्कन्ध तक सभी पुद्गल चतुस्पर्शी कहलाते हैं। (हाँ)

(xiv) विभंग ज्ञानोपयोग उपयोग का आठवाँ भेद है। (हाँ)

(xv) उपयोग का थोकड़ा बाटा बहती अवस्था की अपेक्षा से समझना चाहिए। (हाँ)

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से सही जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्तस्थान में लिखिए:- 10x1 = (10)

(i)	मनोज्ञ रस	(क) 5	साता वेदनीय
(ii)	उच्छवास	(ख) 14	प्रत्येक प्रकृति
(iii)	अकर्मभूमिज	(ग) मोक्ष	30
(iv)	केवली की गति	(घ) स्पर्श	मोक्ष
(v)	आहारक	(च) साता वेदनीय	बन्धन
(vi)	अनुत्तर विमान	(छ) नाम कर्म	05
(vii)	तीर्थंकर की आगति	(ज) बन्धन	38
(viii)	स्निग्ध	(झ) 30	स्पर्श
(ix)	चक्रवर्ती की गति	(य) 38	14
(x)	चित्रकार	(र) प्रत्येक प्रकृति	नाम कर्म

प्र.4 मुझे पहचानो :- 15x1 = (15)

(i) मैं आत्मा के अनन्त वीतरागता गुण की घात करता हूँ। मोहनीय कर्म

(ii) ज्ञानी का उपकार न मानने से मेरा बन्ध होता है। ज्ञानावरणीय कर्म

(iii) हमारा छेदन-भेदन करके जीव शाश्वत सुख (मोक्ष) को प्राप्त करता है। अष्ट कर्म

(iv) मेरी कषाय में मरने वाला जीव देवगति में जाता है। संज्वलन

(v) मैं रस का तीसरा भेद हूँ। कषायला

(vi) मैं मनुष्य जाति का ऐसा भेद हूँ, जिसके पर्याप्त जीव चारों गतियों में सभी स्थानों में उत्पन्न हो सकते हैं। 15 कर्मभूमिज सन्नी मनुष्य

(vii) मेरी आगति 25 की और गति 40 की है। पहली नारकी

(viii) मैं अपर्याप्त अवस्था में ही काल कर जाता हूँ। सम्मूर्च्छिम मनुष्य
(ix) हम ऐसे जीव हैं, जिनके 563 भेद हैं। संसारी जीव
(x) मैं ऐसा गुणस्थान हूँ, जिसमें एक भी लेश्या नहीं पायी जाती है। चौदहवां/अयोगी केवली गुणस्थान
(xi) मैं सम्यग्दृष्टि का ऐसा गुणस्थान हूँ, जिसमें 13 योग पाये जाते हैं। चौथा/ अविरति सम्यक्दृष्टि
(xii) मैं गुरु महाराज आदि की सेवा-सुश्रुषा करने से प्राप्त होने वाली बुद्धि हूँ। वैनयिकी बुद्धि
(xiii) मैं ग्यारहवाँ उपयोग हूँ। अवधि दर्शनोपयोग
(xiv) मुझमें 5 उपयोग लेकर जीव जाते हैं और 3 उपयोग लेकर निकलते हैं। तीन विकलेन्द्रिय
(xv) मुझमें जीव 7 उपयोग लेकर जाते हैं और 8 उपयोग लेकर निकलते हैं। मनुष्य

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्यों में दीजिए- 9x2=(18)

(i) अबाधाकाल किसे कहते हैं ?

उ. कर्मबन्ध होने के प्रथम समय से लेकर जब तक उस कर्म का उदय या उदीरणाकरण नहीं होता तब तक का काल अबाधाकाल कहलाता है।

(ii) शुभ नाम कर्म बन्धन के चार कारण लिखिए।

उ. 1. मन की सरलता, 2. वचन की सरलता, 3. काया की सरलता और 4. विसंवाद रहितता।

(iii) स्थिति बन्ध किसे कहते हैं ?

उ. जीव के द्वारा ग्रहण किये हुए कर्म-पुद्गलों में अमुक काल तक जीव के साथ लगे रहने की कालमर्यादा।

(iv) अन्तराय कर्म की जघन्य-उत्कृष्ट स्थिति एवं अबाधाकाल लिखिए।

उ. स्थिति-जघन्य-अन्तर्मुहूर्त-उत्कृष्ट-30 कोड़कोड़ी सागरोपम। अबाधाकाल- 3 हजार वर्ष।

(v) नरक गति के 14 भेद लिखिए।

उ. 1. घम्मा, 2. वंषा, 3. सीला, 4. अंजना, 5. अरिष्टा, 6. मघा और माघवती। इन सात नारकी के अपर्याप्त और पर्याप्त की अपेक्षा से 14 भेद होते हैं।

(vi) इक्कावन जाति के देवों के नाम संक्षेप में लिखिए।

उ. इक्कावन जाति के देवता- 10 भवनपति, 15 परमाधार्मिक, 16 वाणव्यन्तर, 10 त्रिजृंभक।

(vii) सर्वार्थसिद्ध विमान के देवों की आगति व गति लिखिए।

उ. आगति 15 की- 15 कर्मभूमिज मनुष्य के पर्याप्त। गति 30 की- 15 कर्मभूमिज मनुष्य के अपर्याप्त और पर्याप्त।

(viii) सातवें गुणस्थान में कौन-कौनसी लेश्या होती हैं?

उ. तेजो, पद्म और शुक्ल लेश्या।

(ix) उत्थानादि किसे कहते हैं ?

उ. वीर्यान्तराय कर्म के क्षय या क्षयोपशम से उत्पन्न होने वाले जीव के परिणाम विशेष को उत्थानादि कहते हैं।

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर दो-तीन पंक्तियों में लिखिए : - 9x3=(27)

(i) स्थावर दशक की प्रकृतियों के नाम क्रम से लिखिए।

उ. स्थावर, सूक्ष्म, अपर्याप्त, साधारण, अस्थिर, अशुभ, दुर्भग, दुःस्वर, अनादेय और अयशः कीर्ति नाम।

(ii) दर्शनावरणीय की प्रथम 6 प्रकृतियाँ लिखिए।

उ. 1. निद्रा, 2. निद्रा-निद्रा, 3. प्रचला, 4. प्रचला-प्रचला, 5. स्त्यानगृद्धि (स्त्यानर्द्धि), 6. चक्षु-दर्शनावरणीय।

(iii) आयु कर्म किसे कहते हैं तथा यह किस गुण की घात करता है ?

उ. जिसके उदय से जीव चारों गतियों में अमुक काल के लिए रुका रहे, उसे आयु कर्म कहते हैं। जैसे- जेल में कैदी न चाहते हुए भी रुक जाता है। यह कर्म आत्मा के अटल अवगाहना अथवा अमरत्व गुण को प्रकट नहीं होने देता है।

(iv) असातावेदनीय के उदय के आठ प्रकार क्रमशः लिखिए।

उ. आठ प्रकार से उदय- 1. अमनोज्ञ शब्द, 2. अमनोज्ञ रूप, 3. अमनोज्ञ गन्ध, 4. अमनोज्ञ रस, 5. अमनोज्ञ स्पर्श, 6. मन का दुःख, 7. वचन का दुःख और 8. काया का दुःख।

(v) समुच्चय जीव की आगति को समझाइए।

उ. समुच्चय जीव की आगति 371 की- 563 में से 7 नारकी, 86 युगलिक मनुष्य और 99 जाति के देवता, इन 192 के अपर्याप्त को छोड़कर, क्योंकि ये अपर्याप्त अवस्था में काल नहीं करते हैं।

(vi) मनुष्य गति के 303 भेद कैसे होते हैं ? स्पष्ट कीजिए।

उ. मनुष्य गति के 303 भेद- 15 कर्मभूमिज (5 भरत, 5 ऐवरत, 5 महाविदेह), 30 अकर्मभूमिज- (5 देवकुरू, 5 उत्तरकुरु, 5 हरिवास, 5 रम्यक्वास, 5 हेमवत, 5 ऐरण्यवत), 56 अन्तर्द्वीप, इन 101 सन्नी मनुष्य के अपर्याप्त और पर्याप्त के भेद से 202 भेद। एक सौ एक सन्नी मनुष्य के चौदह अशुचि स्थानों से उत्पन्न होने वाले सम्मूर्च्छिम असंज्ञी अपर्याप्त मनुष्य के 101 भेद। इस प्रकार 202+101= 303 भेद हुए।

(vii) दसवें गुणस्थान में कौन-कौनसे योग नहीं मिलते हैं ? उनके नाम लिखिए।

उ. औदारिक मिश्र, वैक्रिय, वैक्रिय मिश्र, आहारक, आहारक मिश्र, और कार्मण काय योग ये 6 योग नहीं मिलते हैं।

(viii) अरूपी के 61 भेद विस्तार से लिखिए।

उ. अरूपी के 61 भेद- 18 पाप की विरति (त्याग), 12 उपयोग, 6 भाव लेश्या, 5 द्रव्य (पुद्गलास्तिकाय को छोड़कर) 4 बुद्धि (औत्पातिकी, वैनयिकी, कार्मिकी, पारिणामिकी), 4 भेद मतिज्ञान के (अवग्रह, ईहा, अवाय, धारणा), 3 दृष्टि, 5 शक्ति (उत्थान, कर्म, बल, वीर्य और पुरूषकार पराक्रम), 4 संज्ञा।

(ix) तिर्यंच पंचेन्द्रिय में जीव कौन-कौन से उपयोग लेकर जाते हैं और कौन-कौन से उपयोग लेकर निकलते हैं ? उनके नाम लिखिए।

उ. तिर्यंच पंचेन्द्रिय में जीव 5 उपयोग लेकर जाते हैं- 2 ज्ञान, 2 अज्ञान, 1 अचक्षुदर्शन। 8 उपयोग लेकर निकलते हैं- पहली नारकी में उत्पत्तिवत् =58 (3 ज्ञान, 3 अज्ञान, 2 दर्शन)।